LOVE,

LOVING RELATIONSHIPS

जगत में इतनी चहल-पहल है। निश्चित है कुछ प्रयोजन है, कुछ प्राप्ति करना चाहते हैं, तभी इतनी चहल-पहल है। प्राप्ति भी हो जाती है, अच्छा घर प्राप्त हो जाता है, अच्छा शरीर प्राप्त हो जाता है, भोजन प्राप्त हो जाता है अच्छा, अच्छे कपड़े, अच्छी गाड़ी, बच्चे अच्छे, business सब अच्छा, सब प्राप्त हो जाता है लेकिन फिर भी ऐसा है जो कुछ प्राप्त नहीं होता। सब कुछ होते हुए भी कुछ ऐसा है जो नहीं होता है, कुछ-कुछ रिक्तता, incompleteness रहती है, कुछ missing रहता है सब होने के बाद भी। ऐसा क्या है? सब कुछ है पर कुछ-कुछ ऐसा है जो नहीं है।

कई बार लगता है कि धन प्राप्त हो जाए तो हम बहुत सुखी हो जाएँगे परन्तु वास्तविकता ऐसी है नहीं। हमें कई बार यह बात पर विश्वास नहीं होती है परन्तु जिस व्यक्ति के पास एक मात्रा में धन आ गया है, उसके बाद हम उससे बात करें। जिनके पास धन है वो यह जानते हैं, कि उसके बाद धन को कोई महत्व नहीं रह जाता। एक मात्रा में धन प्राप्त होने के बाद धन का आनन्द से, खुशी से, तृप्ति से कोई महत्व नहीं रह जाता। यह सम्भव है कि जब धन हमारे को पर्याप्त मात्रा में प्राप्त न हो तो हम यह बात शायद न समझ पाएँ, पर तब भी आपको अभी समझवा देंगे, कैसे? बिना धन प्राप्त हुए आपको धन की सारी रिक्तता, आपको अनुभव अभी करवाएँगे।

जैसे मान लें, यह दिल्ली स्थान है। यह दिल्ली स्थान का सब कुछ..., सारा धन, सारे होटल, सारी फैक्ट्रियाँ, सब आपकी हो जाएँ, एकमात्र आपकी हो और किसी की भी नहीं। सारी buildings, सारी property, सारे hotel सब कुछ। आपके पास zillions and zillions..., uncountable money हो। सिर्फ एक condition हो कि दिल्ली में और कोई नही होगा, सिर्फ आप ही हो। तो इतने धन के बाद क्या वो satisfaction मिलेगी आपको? चाहे कुछ भी जीवन में प्राप्त हो चाहे न हो, जीव अकेला नहीं खुश हो सकता रह कर, अकेला रह कर खुश। थोड़े दिन के लिए कभी-कभी एकान्त की इच्छा करती है, परन्तु long term के लिए कोई जीव रहना नहीं चाहता। चाहे लड़ाई करके रहना पड़े किसी के साथ, argument हो, पर व्यक्ति रहना चाहता है किसी के साथ।

तो किसी के साथ रहना प्रयोजन नहीं है। हम जो चीज़ miss कर रहें हैं अपने जीवन में, जो चीज़ हमारी miss हो रही है, रिक्तता है, incompleteness है, जिससे satisfaction, तृप्ति नहीं मिल रही, वो क्या है?

वो है प्रेममय सम्बन्ध... Loving relationships... Love and loving relationships..., ये है missing हमारे जीवन के अंदर..., सबके जीवन में। चाहे प्रचुर मात्रा में धन हो चाहे न हो, ये loving relationships जो हैं, यही एक missing factor है।

प्रेममय सम्बन्ध ही क्यों चाहिए? प्रश्न उठता है।

इसके लिए अगर हम मूल पर जाए तो उत्तर प्राप्त होता है। सबका मूल क्या है?

भगवान्।

हम किन के अंश हैं?

"ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।।"

(गीता-१५.७)

भगवान् कहते हैं- "आप मेरे अंश हो", तो like father like son। जिस प्रकार से पिता आनन्द की अनुभूति करते हैं, उसी प्रकार से संतान भी आनन्द की अनुभूति करेगा। तो पिता कैसे आनन्द की अनुभूति करते हैं, कृष्ण? वे प्रेममय सम्बन्धों के द्वारा। गोलोक है क्या? Land of love..., प्रेममय सम्बन्धों का स्थान। तो प्रेममय सम्बन्धों से ही आनन्द की अनुभूति भगवान् करते हैं और उनके अंश होने के कारण हमको भी प्रेममय सम्बन्धों से ही अनुभूति करनी होगी, आनन्द की अनुभूति होगी। इसके अलावा और कोई मार्ग नहीं है। सब कुछ हो, पर प्रेम से बात करने वाला न हो तो..., व्यक्ति कहता है "क्या फायदा, मेरे से तो ढंग से बात भी नहीं करते, ये अरबों रुपये का क्या फायदा?" घर पर ऐसे सुना होगा आपने?

ये प्रेममय सम्बन्ध जो हैं हम हर समय चाहते हैं, यद्यपि हमे मालूम नहीं है। हमे यह भी नहीं मालूम कि प्रेम क्या है? हमे यह भी नहीं मालूम कि प्रेममय सम्बन्ध क्या होते हैं, यद्यपि चाहते हम यही हैं क्योंकि इसी से तृप्ति मिलेगी। बिना प्रेममय सम्बन्ध हुए तृप्ति नहीं मिल सकती ।

जब तक विवाह नहीं होता हम सोचते हैं कि पति प्राप्ति से तृप्ति मिल जाएगी- यह भ्रम कुछ दिनों में दूर हो जाता है। तृप्ति मिलती है प्रेममय सम्बन्धों से। प्रेम, Love and loving relationships, ये सबसे महत्वपूर्ण स्थान हमारे हृदय में रहता है। इसकी प्राप्ति की burning desire रहती है हमेशा। जलते रहते हैं हम हमेशा- ऐसा कोई हो जिसको मैं प्यार कर सकूँ और वो मुझे भी प्यार कर सके। I want to love someone and I want to be loved by someone..., परन्तु बात तो सब ठीक है, हमें पर यह नहीं पता कि ये Love क्या होता है और यह भी नहीं पता कि loving relationship क्या होती है, यद्यपि हम चाहते हर समय यही हैं- LOVING RELATIONSHIP.

Loving relationship का मतलब है...

- Love का मतलब ही है कि उनकी प्रसन्नता के लिए कार्य करना। If we want to love someone- इसका मतलब है कि दिन के २४ घंटे हम उनकी प्रसन्नता के लिए कार्य करना चाहते हैं।
  क्या ऐसा है हमारा किसी के लिए भी, कि हम उनकी प्रसन्नता के लिए कार्य करना चाहते हैं?
- अच्छा love कभी one-way नहीं होता, love two-way है।

अब जैसे भगवान् के भक्त हैं, वो भगवान् को...

भक्ति की क्या परिभाषा है? प्रेममयी सेवा। भक्ति और कुछ नहीं है, भगवान् के साथ प्रेममय सम्बन्ध को भक्ति कहते हैं।

तो जब भगवान् से सम्बन्ध होता है तो प्राणी जो होता है वो भगवान् की अपने मन और इन्द्रियों द्वारा सेवा करना चाहता है, सेवा करता है-

"सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं तत्परत्वेन निर्मलम्।
हृषीकेण हृषीकेश सेवनं भक्तिरुच्यते।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला १९.१७०,
श्री श्री भक्तिरसामृत सिन्धु १.१.१२)

अपने इन्द्रियों द्वारा कृष्ण के मन और इन्द्रियों को संतुष्ट करना, इसको भक्ति कहा जाता है। हम उनको संतुष्ट करना चाहते हैं, we want to love someone, वो हम उनकी प्रसन्नता के लिए कार्य कर रहे हैं और वो जो हैं, वो क्या करते हैं कृष्ण -

"मुहूर्त्तेनापि संहर्तुं शक्तो यद्यपि दानवान्।
मद् विनोदार्थं करोमि विविधाः क्रियाः।।"

(श्री परमात्म सन्दर्भ अनुच्छेद ९३)

वो जो उनको प्यार करता है, वो उनके लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की क्रियाएँ करते हैं ताकि वो उनको संतुष्ट करें। आप उनको संतुष्ट करना चाहते हो और वो आपको संतुष्ट करना चाहते हैं, इसको प्रेम कहते हैं, इसको प्रेममय सम्बन्ध कहते हैं। ये हम चाहते हैं।

क्या यह किसी जगत के प्राणी के साथ क्या सम्भव है क्या?

क्या वो सर्वसमर्थ है कि वो हमारी प्रियता के लिए *करोमि विविधाः क्रियाः?* क्या हमारी प्रसन्नता के लिए कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो विविधा क्रिया करेगा? वो भी करेगा तब जब हम दिन रात उनकी सेवा, उनकी प्रसन्नता के अतिरिक्त कुछ चाहते न हों।

ये सम्बन्ध, प्रेममय सम्बन्ध केवल ईश्वर से हो सकता है। गले की प्यास पानी से बुझ सकती है पर प्रेममय सम्बन्धों की प्यास केवल ईश्वर से बुझ सकती है, केवल ईश्वर। कोई जीव में यह समर्थ नहीं है कि किसी और जीव को परितुष्ट कर सके। सम्भव नहीं है।

क्योंकि हमें प्रेम नहीं पता, प्रेममय सम्बन्ध नहीं पता, परन्तु प्रेममय सम्बन्ध चाहते तो हैं हर क्षण, खाली रह नहीं सकते। जीव जो है कितना भी frustrated क्यों न हो जाए, कितना भी दुःखी क्यों न हो जाए, वो प्रेममय सम्बन्ध प्राप्त करने का प्रयास रोक नहीं सकता अपना। रोक नहीं सकता। कोशिश करेगा, तुम्हें करनी पड़ेगी ! ईश्वर के अंश हो, कोशिश करनी पड़ेगी हर समय प्रेममय सम्बन्ध की।

अब जीव को अगर नहीं पता कि प्रेममय सम्बन्ध कैसा होता है, हमने आपको स्पष्ट बताया- जीव भगवद् प्रसन्नता के लिए, मन-इन्द्रियों की संतुष्टि के लिए कार्य कर रहा है और भगवान् उनकी तुष्टि के लिए। स्वार्थ की गंध ही नहीं है, केवल प्रेम ही प्रेम, देना ही देना।

अब जीव को मालूम नहीं है कि यह जो प्रयास है अगर ईश्वर के अतिरिक्त किसी भी स्थान पर करेंगे तो विफलता मिलेगी। सामान्य जीव को तो मालूम नहीं है, वैष्णव जगत में भी बहुत किसी-किसी को मालूम है, शायद अब से पहले न मालूम हो। तो जब मालूम नहीं सही कहाँ पर प्रयत्न करना है तो कहाँ पर करोगे प्रयत्न?

जो दिख रहा है, जहाँ-जहाँ नज़र जा रही है, उनके साथ प्रयत्न करेंगे कि ये मुझे प्रेममय सम्बन्ध दे दें। तो आप ये सोचें कि आप जीव के साथ प्रयत्न कर रहे हो, एक जीव क्या है, जिसके साथ आप प्रयत्न कर रहे हो प्रेममय सम्बनध का? पहले हम आपको बताते हैं कि आप क्या हैं? अच्छा क्या पहली बार प्रयत्न कर रहे हैं हम प्रेममय सम्बन्ध के लिए? पहली बारी, सनातन काल में क्या हम पहली बार प्रयत्न कर रहे हैं?

हाँ या न?

नहीं।

क्या ५ साल पहले प्रयत्न किया था?

हाँ।

क्या २० साल पहले किया था?

अच्छा, क्या पिछले जन्म में किया था, प्रयत्न किया था प्रेममय सम्बन्धों के लिए?

क्या ५० जन्म पहले भी किया था प्रेममय सम्बन्धों के लिए प्रयत्न?

नहीं मिला। क्या १००० जन्म पहले भी किया था? प्रयत्न किया था प्रेममय सम्बन्धों के लिए?

हम पता है क्यों बता रहे हैं आपको बात?

एक बात अच्छे से और समझिए, जो love है, happiness है- this is not a material experience..., this is a transcendental experience... Loving relationship is a transcendental experience. Spiritual experience of a jīva is loving relationship..., happiness is a spiritual experience of a jīva. Spiritual चीज़ एक बारी प्राप्त हो जाए तो उसके अतिरिक्त आप कुछ चाह ही नहीं सकते। अगर आपको प्रेममय सम्बन्ध प्राप्त कभी हुए होते तो आप कुछ और चाह नहीं सकते, क्योंकि भगवान् का नाम है *"असमोर्ध्वा"*, उनसे श्रेष्ठ कोई नहीं हैं। तो उनसे सम्बन्ध स्थापित होने के बाद तो आप अपसराओं को भी, अपसराओं के ऊपर भी आप थूकना भी नहीं चाहेंगे, स्वप्न में भी ब्रह्मलोक के सुख की ओर देखना नहीं चाहेंगे। Love is a transcendental experience of a jīva... Loving relationship is a transcendental experience, spiritual experience which can never be taken back once given. कोई नहीं छीन सकता।

अब इतने जन्मों से हम प्रयत्न कर रहे हैं, किसका? प्रेममय सम्बन्ध का। समस्या सारी क्या है?

"कृष्ण भूलिया सेइ जीव अनादि बहिर्मुख।
अतएव माया तारे देय संसारदुःख।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला २०.११७)

कृष्ण को भूल के सारे प्रयत्न कर रहे हैं। सारी समस्या यह है कि हमको जाना right है और हम जा left रहे हैं- जीव के पास। आनन्द है कृष्ण के पास, भगवद् गीता (९.१८)

"गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्।।"

(भगवद् गीता ९.१८)

गति- वो गति हैं, हमारी सारी गतियों की गति, गंतव्य वो हैं। प्रेममय सम्बन्ध चाहते हो तो भी गति कौन हैं- ईश्वर..., श्रीकृष्ण। उनसे ही हमें सारा प्रेममय, आनंदमय,

रसमय जो हम आदान-प्रदान चाहते हैं, वो ही..., वो ही कर सकते हैं और कोई कर नहीं सकता। उनका नाम है *"अच्युत"*। अच्युत माने जो कभी च्युत नहीं होते, infallible। वो आपको तुष्ट करने में कभी च्युत नहीं होंगे। आप हर समय तुष्ट रहोगे, उनका नाम ही अच्युत है। नाम है उनका *"अनन्त"*। अनन्त मात्रा में अनन्त सुख हमें देने को तत्पर हैं हमेशा... और उस अनन्त मात्रा के बिना एक स्फुलिंग से क्या हमें आनंद मिलेगा?

प्रारब्धवश हमें कोई स्त्री-पुरुष मिल जाते हैं पति-पत्नी, पुत्री रुप में, माता-पिता या बच्चा मिल जाता है..., प्रारब्धवश। अब हमें तो तड़प है प्रेममय सम्बन्धों की, प्रेममय सम्बन्ध हों। अब और कोई नहीं दिखता तो हमारे अनन्तानन्त जन्मों की जो प्यास है, किस चीज़ की? प्रेममय सम्बन्ध की। हम क्या करते हैं? कितना burden है, कितने जन्मों का?

हज़ारों? लाखों? करोड़ों?

करोड़ों तो tip भी नहीं हैं, tip। करोड़ों बोलना तो बहुत...., जब प्रलय हुआ था न पिछली बार, उसके बाद जब सृष्टि हुई तब आप यहाँ आए हैं, तो प्रलय में भी महाविष्णु के पास थे उदर में, अरबों खरबों जन्म तो तब हो चुके थे। उसके बाद इसके अलग और उससे पहले जब सृष्टि शुरु हुई थी तब भी महाविष्णु में थे, ऐसे हम अनन्तानन्त जन्मों से अनन्तानन्त प्रयास कर चुके हैं अनन्तानन्त लोगों के साथ, किसलिए? कि तुम मेरे कृष्ण बन जाओ। हे मेरी पत्नी, हे मेरे बच्चे, तुम मुझे वो दे दो जो मुझे आज तक अरबों..., करोड़ों नहीं, अरबों, गिनती नहीं कर सकते, इतने जन्मों में जो मुझे कोई नहीं दे पाया, सब मिल कर नहीं दे पाए, तुम मुझे वो दे दो। क्या ऐसा आप कोशिश करते हैं?

हाँ या न?

हमारे इतने जन्म हो चुके हैं कि केवल हड्डियाँ इकट्ठी कर दी जाएँ तो सुमेरु पर्वत खड़ा हो जाऐगा, केवल हड्डियाँ। खून हमारा एक साथ रख दिया जाए तो कितने तो oceans बन जाएँगे, समुद्र। आँसू का समुद्र अलग होगा आपका, खून का समुद्र अलग, हड्डियों के पहाड़ अलग, इतने जन्म हो चुके हैं और इतने अनन्तानन्त प्रयत्न कर चुके हैं अनन्तानन्त जीवों के साथ कि तुम मुझे परितुष्ट कर दो। तुम मेरे हृदय की रिक्तता को पूर्ण कर दो। वो बेचारा कैसे करे? वो तो खुद परिपूर्ण होना चाहता है, ईश्वर के सम्बन्ध से ही तो वो परिपूर्ण होगा। यदि हम किसी जीव से, पति से, पत्नी से, किसी से भी परितृप्ति-परितुष्टि की आशा, कामना करते हैं, इसका मतलब क्या है? इसका मतलब बड़ा सरल है कि न हम उसको आत्मा मानते हैं, न

स्वयं को आत्मा मानते हैं। यदि हम स्वयं को आत्मा मानेंगे तो हमें पता है कि हमारी परितुष्टि-परितृप्ति तो केवल ईश्वर ही कर सकते हैं, वे ही अच्युत हैं, वे ही अनन्त हैं, वे ही *"करोमि विविधाः क्रियाः"* हैं हमारे लिए। यह कैसे कर सकता है? अगर हम किसी को जीव मानेंगे तो हमको पता है कि वो नहीं कर सकता है। और यदि हम खुद को जीव मानेंगे तो भी हमें पता है कि वो नहीं कर सकता। तो जब हम किसी और से परितुष्टि चाहते हैं जीवन में, इसका मतलब है न तो हम स्वयं को जीव मानते हैं और न ही किसी और को जीव मानते हैं। हम अपनी पत्नी को, या जिस भी बच्चे को देख रहें हैं, कई बारी जब उम्र बड़ी होती है तो बच्चों से हम परितुष्टि चाहते हैं कि तुम मुझे वो तृप्ति दे दो जो मुझे कोई नहीं दे पाया।

आप जिसको जैसे देख रहे हो, वो वो नहीं है। कैसे समझें इस बात को?

जीव है क्या?

एक कण। इतना बड़ा नहीं है जीव, जितना..., जैसे हमें दिखता है जो हमारे को। वो ऐसा जीव नहीं है। ये तो dead body है, इसमें जीव है। तो जीव एक कण है। जैसे आप सूर्य की रोशनी देखते हैं, कण नहीं देखते..., थोड़े-थोड़े से कण? उससे भी कई गुना छोटा- ये, ये आपको ये कैसे देगा? आप बताओ, ये तो ये है, इतना minute, इतना छोटा। आपको समुद्रिक आनन्द चाहिए। एक चिंगारी सूर्य की कमी कैसे पूरी करे आपके हृदय में? यद्यपि सूर्य और चिंगारी वस्तुतः एक ही चीज़ हैं परंतु quantity में तो भेद है। Gold mine और Gold का एक टुकड़ा एक ही चीज़ हैं पर Gold mine और Gold के टुकड़े में बहुत भेद है। तो हमें जो आनन्द प्राप्त हो सकता है,

"रसं ह्येवायं लब्धवानन्दी भवति"

(तैत्तिरीय उपनिषद् २.७.१)

उनको लब्धवा, प्राप्त करके ही जीव के आनन्दमय सम्बन्ध, आनन्द प्राप्त हो सकता है।

अब हमें पता नहीं है कि वो जीव हमें आनन्द नहीं दे सकता, परंतु जो आग जली हुई है प्रेममय सम्बन्ध की, जो हमें नहीं पता कि ईश्वर से ही परितुष्ट होंगे, तो क्या करेंगे? क्या करेंगे?

जो सामने दिख रहा है, उन्हीं के साथ प्रयत्न करेंगे फिर से। क्योंकि there is nothing else to do. खाली नहीं बैठ सकते, प्रेममय सम्बन्ध के बिना रह नहीं सकते। तो नहीं पता कहीं और तो वहीं प्रयत्न..., जो दिखेगा प्रयत्न करेंगे। कभी

कोई, कोई आपके ऊपर पूरा अपना..., कहते हैं न- Has anyone put all their stakes on you कि आप तुष्ट करो? ऐसा हुआ है किसी के साथ?

नहीं हुआ?

या आप किसी के साथ ऐसा नहीं कर रहे, कि हाँ तुम मेरे प्रेमरूपाय हो, आनन्ददाता हो? कोई सामान्य व्यक्ति करे, वो अज्ञान में है, वो अलग बात है। परंतु यदि भक्त ये करे कभी, तो यह शोक का विषय है। एक जीव दूसरे जीव को सतुंष्ट नहीं कर सकता। सम्भव नहीं है- ये honesty है। सम्भव ही नहीं है जो चीज़, त्रिकाल में सम्भव नहीं है। No one can satisfy you! कोई बोले थोड़ी सी satisfaction- ये थोड़ी या ज़्यादा satisfaction कुछ नही होता। या तो satisfaction होता है या नहीं होता। ये थोड़ी ज़्यादा नहीं होता।

कई बारी यह भी भ्रम होता है जब हम संसारी भाषा सुनते हैं, क्योंकि हमें पूर्ण ज्ञान नहीं है तो हम भ्रमित हो जाते हैं। बच्चे एक बात बताओ- क्या... Is there anything higher than loving relationships?? Loving relationships में जो सुख मिलता है इससे ऊँचा कुछ है? सुनते हैं न हम ऐसा? आप बताइए इससे नीचे क्या होता है? You want to love and you want to be loved. इससे आपको कम में चलेगा ही नहीं।

और love का मतलब है unconditional love... Love means unconditional. और वो केवल भगवान् के साथ ही सम्भव है, वो जीव के साथ सम्भव ही नहीं है।

अब जो सम्बन्ध होते हैं स्त्री-पुरुष के या माता-पिता, बच्चों के, तो सम्बन्ध का underlying theme यही होता है- देखो...! Justify your place in my, in my world! तुम अपने स्थान को..., जो मेरे, जिस जगत में मैं जी रहा हूँ, जिसका मैं राजा हूँ, उस जगत के तुम राजकुमारी बनने का..., justify your existence in my universe. I have a universe in which I am the king. You have to be the queen to satisfy me. Directly कई बारी नहीं बोलते कि तुम्हें मुझे संतुष्ट करना पड़ेगा, पर underlying theme यही होता है।

"तुम समझते क्यों नही हो कि मुझे क्या चाहिए?" अरे! आप क्यों नहीं समझते कि आपको क्या चाहिए।

क्या आपके मन और इन्द्रियाँ आपके control में है?

हाँ या न?

तो आप यह कौन सी प्रेम की परिभाषा कर रहे हो कि दूसरे के मन और इन्द्रियाँ जब आपके control में आ जाएँगे तो उसे आप loving relationship या सुख बोलोगे। जो आपकी अपनी हैं, जो सबसे easily controllable हैं- आपके मन और इन्द्रियाँ, वो छोड़कर आप दूसरे सबकी मन और इन्द्रियाँ, "तेरे को कहा था न बेटा, तेनु कहा"- सबके मन और इन्द्रियाँ control कर रहे हैं सिवाए अपने छोड़ के। और इसको हम loving relationships कहते हैं। आश्चर्य ।।

इस दुनिया में जो हैं चिड़ियाघर ऐसे ही खुले हैं, हम स्वयं के दर्शन mirror में, शीशे में कर सकते हैं, ये अजायबघर से कम थोड़े न है कुछ। अपने को छोड़कर सबके मन और इन्द्रियाँ control कर रहे हैं, किसलिए? Loving relationship के लिए। इसे loving कहते हैं? हम उनके प्रभु बनना चाहते हैं। जबकि प्रेम में तो दासता होती है, हार्दिक दासता को प्रेम कहते हैं। राधारानी स्वयं, श्रीकृष्ण चाहते भी नहीं हैं, तो भी उनका सब गोपियों से अंगसंग..., कृष्ण चाहते नहीं हैं। राधारानी, दासता यह है कि वे चाहती हैं कि सब मिलकर कृष्ण को संतुष्ट करें। यह नहीं कि, कृष्ण नहीं कह रहे कि मैं और गोपियों के पास जाना चाहता हूँ, राधारानी जबरदस्ती ले कर जाती हैं। श्रीकृष्ण नहीं जाना... कहते हैं- नहीं जाओ! तो श्रीकृष्ण अन्य गोपियों से भी राधारानी को तुष्ट करने के लिए मिलते हैं और राधारानी श्रीकृष्ण को तुष्ट करने के लिए अन्य गोपियों से उनका संग करवाती हैं। राधारानी कहती हैं- "यदि मुझे पता चल जाए श्रीकृष्ण किसी को चाहते हैं, किसी स्त्री को, तो मैं उस स्त्री के जाकर पाँव दबाऊँगी, सेवा करूँगी, तू कृपया करके श्रीकृष्ण को संतुष्ट कर, क्योंकि मेरे श्रीकृष्ण को इससे संतुष्टि मिलेगी।" तो प्रेम का मतलब है कि उनकी प्रसन्नता के लिए कार्य करना। यदि करेंगे तो वे भी हमारी प्रसन्नता के लिए दिन रात कार्य करेंगे। *"मद् विनोदार्थम करोमि विविधाः क्रियाः"*, वे भी करेंगे।

आप बताइए, क्या किसी जीव के लिए सम्भव है हमारे लिए श्रीकृष्ण का स्थान करना। अब ज्ञान नहीं है तो जीव क्या बोलता है? "Come to me, I am the unlimited reservoir of pleasure, I am unlimited... I am such a credit card जिससे you can get all the unlimited supply of everything you need. Isn't it?" जीव को ज्ञान नहीं है तो यही बोलता है? एक तो जाने वाले को ज्ञान नहीं है, वह जीव से संतुष्टि चाहता है और जो दूसरा है उसको भी ज्ञान नहीं है, वह भी सोचता है कि हाँ मैं दे दूँगा। भोलापन है, अज्ञानता है, यह सम्भव नहीं है होना।

अब सम्भव भले न हो, frustration तो है क्योंकि प्रेममय सम्बन्ध तो हो ही नहीं सकते, क्योंकि हम चेष्टा ही नहीं कर रहे देने की। हम तो प्रेममय सम्बन्धों से क्या कर रहें हैं? पहले उसमें अपने सारे सुखों को, सारे frustrations को..., कब की?

अनन्तानन्त जन्मों की सारी frustration को सारे उस पर लाद देते हैं और फिर हम यह सोचते हैं- ये कोई प्रेम है? ये hallucination है। Hallucination समझते हैं? ये भ्रम है एक प्रकार का कि हम सारा आनन्द का, satisfaction का एक स्त्रोत एक जीव को मान लेते हैं। आप सोच रहे हो कितना बड़ा भ्रम है, कितना बड़ा! इस संसार में दृश्यमान जो हैं ७०० करोड़ लोग हैं, उसमें से सारों को छोड़कर एक। जो कोई नहीं कर सकता इस जगत में, इस जन्म को भी ले लें, वो you can do for me..., आप मेरे लिए कृष्ण बनोगे? मुझे तुष्ट करोगे? - ये underlying theme है, यद्यपि हम जानते नहीं हैं।

एक जीव दूसरे को संतुष्ट नहीं कर सकता। इसलिए ठाकुर अवतरित होते हैं। "मैं हूँ।" एक तरफ जीव बोल रहा है कि-"मैं हूँ", इधर ठाकुर बोल रहें हैं कि-"वो मैं हूँ। तुम मेरी अर्चन करो, मैं अवतरित हुआ हूँ। मैं तुम्हें संतुष्ट करूँगा।" एक वो बोल रहे हैं कि-"मैं प्रेमरुपाय हूँ", एक हमारे यहाँ पर सम्बन्ध हैं पति-पत्नी में, वो बोलते हैं-"मैं प्रेमरुपाय हूँ", किसकी बात माननी चाहिए?

ठाकुर की।

वो बोलते हैं-"मैं आनन्ददाता हूँ", वो कहते हैं-"मैं आनन्ददाता हूँ।" किसकी बात माननी चाहिए?

ठाकुर की।

देखो, कृष्ण ही हमें संतुष्ट कर सकते हैं- यह बात, यह भगवान् आपको समझा ही देंगे। हमने बताया..., थोड़ी दिन में आपके..., हो सकता है तत्क्षण भी आ जाए, यदि प्रबल सही ज्ञान को लेने की इच्छा है। जो ठाकुर की सेवा कर रहा है, जिनको मंत्र प्राप्त हुए हैं, जिनको भजन प्राप्त हो गया न, वो व्यर्थ नहीं जाएगा। ये भजन, ये ठाकुर, ये आपको भगवद् प्राप्ति करा के ही छोड़ेंगे, आप बच नहीं सकते।

आप मानोगे कि हाँ यही आनन्ददाता हैं, यही मेरे प्रेममय-रसमय-आनन्दमय सब कुछ हैं। ये ठाकुर की सेवा जिसने करनी शुरु कर दी है, ये जो मंत्र पाठ कर रहे हैं- गायत्री, मंत्र स्मरण, वो आपको भगवद् प्राप्ति करा के छोड़ेगा। ये ऐसा बीज है जो प्रेम का वृक्ष बना के छोड़ेगा आपके हृदय में। तो चिंता नहीं है, बस यही कि हम फटाफट चाहते हैं तो फटाफट, नहीं तो थोड़ी देर में। जब तक देर रहेगी तब तक दुःख रहेगा बस।

जब आनन्द नहीं मिलेगा एक जीव को दूसरे जीव के साथ सम्बन्ध में तो क्या बोलते हैं? "जो मैं चाहता हूँ तुम मुझे वो नहीं दे रहे", बोलते हैं? सुना है आप घर में ये वार्ता होती है?

अगर वो हृदय से आप सोचें कि, अगर same बात क्या वो हमें नही बोल सकता? "जो मैं चाहता हूँ आप मुझे वो नहीं दे रहे।"

Yes or no ?

हाँ। आप चाहते हो कि वो कृष्ण बन जाएँ, वो चाहते हैं कि आप कृष्ण बन जाओ। यह उस प्रकार से है कि २ उँगलियाँ टूटी हुई हैं, शरीर से अलग हैं और वो तुष्ट होना चाहती हैं, तृप्त होना चाहती हैं, तो कैसे होंगी? एक दूसरे के साथ खेलकर? तो जब हाथ से जुड़ जाएगा, शरीर से जुड़ जाएगा तो अपने आप परितुष्टि मिल जाएगी। तो बिना सर्वसमर्थ भगवान् से जुड़े प्रेममय सम्बन्ध, तृप्ति, तुष्टि, completeness, satisfaction, तृप्ति नहीं मिल सकती। उनसे जुड़े तो मिल गई। Independently त्रिकाल में सम्भव नहीं, हो ही नहीं सकता।

हम इस बात को अगर नहीं समझेंगे, इनसे सम्बन्ध बनाएँगे, इनसे सम्बन्ध बनाए तो तुष्टि नहीं मिली तो- "You are useless, आप बेकार हो, मैं आपको अलग करता हूँ।" तो दूसरे से सम्बन्ध बनाएँगे, divorce करेंगे या अलग हो जाएँगे, या बच्चे को- "तू बाहर चला जा, घर से चला जा, you are not Kṛṣṇa for me." तो दूसरे से सम्बन्ध बनाएँगे तो दूसरे से क्या होगा? फिर वही होगा जो इतने जन्मों में हुआ है- एक frustration और। तो ऐसे ही indulge होंगे, किसमें? Sensual activities में, liquor में, नशा में, इसमें ही तो होंगे क्योंकि प्रयत्न तो जारी रहेगा और असफलता भी जारी रहेगी। विफलता..., तो कहीं न कहीं प्रयत्न करते रहेंगे, करते रहेंगे, रहेगा परिणाम वही- अतृप्ति।

इसलिए आजकल जो सम्बन्ध हैं, उसको consumer goods की तरह हैं- तुम पसंद नहीं तो तुम, तुम पसंद नहीं तो तुम, दूसरा, दूसरा नहीं तो तीसरा। और तीसरा क्या ३ अरबवाँ भी कर लो तो भी क्या? इसलिए महाभारत में एक श्लोक है कि अगर पूरे संसार की सारी स्त्रियाँ भी किसी व्यक्ति को दे दी जाएँ, सारा धन भी किसी को दे दिया जाए, वह तब भी कभी संतुष्ट नहीं हो सकता। क्यों? क्योंकि सारे spark मिलकर भी सूर्य नहीं बन सकते।

और प्रेम का मतलब तो है भी..., क्या? हम प्रेम चाहते हैं, प्रेम का मतलब तो है कि मैं unconditionally किसी को प्रेम करुँ, मैं, और कोई मुझे unconditionally प्रेम करे। I want to be the center of someone's universe. प्रेम क्या है? आप चाहते

हो न कोई आपको miss करे। आप उनके हृदय का परमात्मा की तरह रहना चाहते हो उनके हृदय में, इसको प्रेम कहते हैं। तो भगवान् तो भागवतम् में ज़ोर से बोल रहे हैं-

"साधूनां हृदयं मह्यम्, साधूनां हृदयं त्वहम्।
मदन्यत्ते न जानन्ति नाहं, तेभ्यो मनागपि।।"

(श्रीमद् भागवतम्-९.४.६८)

"मैं साधुओं के हृदय में रहता हूँ और साधु मेरे हृदय में रहते हैं।" वे तो बोल ही रहे हैं, जो आप चाहते हो वो वे बोल रहे हैं।

वे अच्युत हैं, अनन्त हैं, असमोर्ध्वा हैं, बोल रहे हैं- *"साधूनां हृदयं मह्यम्"*, वो साधु के हृदय में मैं रहता हूँ और वो मेरे। I am the center of Their existence and They are the center of My existence. वे सर्वसमर्थ हैं न सबसे कर सकते हैं।

भगवान् राम को माल्य अर्पण कर रहे हैं अयोध्यावासी तो किसी को भी यह नहीं लग रहा..., असंख्य अयोध्यावासी, किसी को यह नहीं लग रहा कि हम असंख्यों में से एक हैं, अनगिनत में से एक हैं। सबको क्या लग रहा है- बिल्कुल मेरे सामने बैठे हैं, सीधा उनको अर्पण..., यह सर्वसमर्थ भगवान् कर सकते हैं। वो कर सकते हैं, वो ही कर सकते हैं।

जब हम बैठे हैं पति-पत्नी या बच्चे हो, माता-पिता, अगर हम honest हों; वैष्णव हो तो ही यह बात करिए, नहीं तो कभी मत करिएगा। क्योंकि समझ ही नहीं आ सकती यह बात, कि, "देखो, I cannot satisfy you" अगर वो honest होंगी, अगर जैसे पति-पत्नी वैष्णव हैं, बोलेंगे, "देखो नाम मेरा भले ही हो असीमा पर मेरी है सीमा", ठीक है? वो बोलेंगे, "मेरा नाम भले हो सदाकृष्ण पर मैं कभी कृष्ण नहीं हूँ", है न? "मैं आपका विनोद नहीं कर सकता और न ही आप मेरे नयनानन्द या हृदयानन्द हो।" तो यह honesty है। तो हम लोग मिल कर उनसे जुड़ें न कि एक दूसरे से जुड़ें।

भगवद्-भाव रहित सम्बन्ध- यह हमारा सर्वनाश करता है। यही हमें frustration..., किसी से भी भगवद्-भाव रहित सम्बन्ध न करें, किसी से भी। सबसे भगवद्-भाव युक्त हो कर ही सम्बन्ध करिए। ये पति-पत्नी में न, ये भी आत्मा है हम भी आत्मा हैं। इनको भी वो चाहिए तभी इनको परितुष्टि होगी और हमे भी वो चाहिए। एकदम honest बात है कि, "देखो हम एक दूसरे को कभी भी, हम..., हम कृष्ण नहीं हैं, न आप मेरे कृष्ण हो न मैं आपकी, हम कर नही सकते संतुष्ट किसी को।" कोई जीव नहीं कर सकता। अक्षम है क्या करें?

जीव कितना छोटा है पता है? Jīva is soooooo tiny..., not tiny..., Tiny होता है इतना छोटा; soooooo tiny, इतना छोटा है जीव, तो कैसे हमको तुष्ट करेगा? जो दिख रहा है न वो जीव नहीं है। ये देहात्मबुद्धि के कारण हम खुद को भी ये मानते हैं और उसको भी वो मानते हैं जो शीशे में दिखता है। वो नहीं है, वो कण है। Jīva is longing for a loving experience, transcendental experience. इसलिए कुछ भी पर्याप्त हो जाए, तो भी हमेशा होता है कि- it is not enough; कितना भी प्राप्त हो जाए। यहाँ पर कितने लोग हैं, स्वामी जी! ये सौ-सवा सौ करोड़ रुपये के तो घर मे रहते हैं, सौ-सवा सौ करोड़ रुपये का जिसका घर हो तो उसके बाद भी क्या is it enough? क्या पर्याप्त है?

Yes or No?

पर्याप्त नहीं है। जितना भी हमारे पास है that is not enough. क्यों?

वो जो enough, जो रिक्तता है न, वो प्रेममय सम्बन्धों से प्राप्त होगी। और वो उनके साथ ही सम्भव है, जीव नहीं कर सकता।

यह किसी को criticize करने की बात नहीं है, कि किसी को गलत बोला जाए; जीव के लिए यह सम्भव नहीं है यह चीज, सिर्फ यह बात को स्वीकार करना है हमें और सही जगह प्रयत्न करना है। प्रयत्न तो जारी रहेगा, प्रयत्न को आप रोक नहीं सकते हो। और इसमें गृहस्थ की, विरक्त की; इसमें कोई भेद नहीं होता, कि यह गृहस्थ है यह विरक्त है। विरक्त तो, भीतर के false expectation से होना है विरक्त। विरक्त किससे होना है? आपके भीतर जो गलत आशाएँ हैं उससे विरक्त होना है। जगत में तो कुछ भी नहीं है, यह तो हमने माना हुआ है जो भी है। किसी में सुख, कोई लिखा होता है कि ये इनसे सुख मिलेगा? हमने माना हुआ होता है उसमें सुख। और यह जगत जो है यह सबको झूठ बोलने में और गलत चीज़ों में और फँसा रहा है। बोलते हैं, 'Made for each other'. 'Made for each other' क्या है? जीव और भगवान्। वो ही तो एक दूसरे को संतुष्ट, वो ही तो संतुष्ट करेंगे। एक जीव कैसे करेगा दूसरे को? ऐसे भ्रम हम देखते हैं और भ्रम है और बढ़ जाता है।

देखो, सही गलती स्वीकार कर लेंगे तो उसे सुधारने की सम्भावना हो जाती है। जब हम गलती को ही नहीं पकड़ेंगे कि मूल गलती क्या है, तो ठीक कैसे होंगे?

है कि नहीं?

मूल गलती यह है कि, *"कृष्ण भूलिया"*, कृष्ण को छोड़ कर हम आनन्द चाहते हैं। मूल गलती यह है। देखो, उपासक या साधक क्या होता है? उपासक या साधक वह होता है जो अपनी गलती को सामने रखता है, अपनी गलती को जो सामने रखता है वह उपासक होता है। और संसारी कौन होता है? जो दूसरे की गलती को सामने रखता है। आपस में जब बात होती है तो हम कभी किसकी गलती सामने रखते हैं? किसकी?

दूसरे की।

क्या अपनी गलती सामने रखते हैं?

उपासक या साधक मतलब जो अपनी गलती सामने रखता हो, तभी तो सुधार होगा। और यदि हम किसी और की गलती को ही सोच रहें हैं, चिंतन कर रहें तो हमारे में संसारिक भाव है। और यह हम, यह श्लोक तो, यह तो संसारी व्यक्ति भी जानता है-

"त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव।
त्वमेव सर्वम् मम देव देव।।"

'एव' बोल रहे हैं हर एक के साथ। तुम ही माता, तुम ही पिता, तुम ही सखा, तुम ही बन्धु। जब 'ही' बोल रहे हैं तो तो इसमें तो कुछ बचता ही नहीं है। तुम ही धन हो- द्रविणम्। सारे सम्बन्ध उनसे हैं, सुहृद, साक्षी सब, सारे सम्बन्ध उन्हीं से हैं। उन्हीं... He is an unlimited reservoir of transcendental..., अनन्तरस का अनन्त सागर हैं वो। जो हमें चाहिए वो उन्हीं से ही मिल सकता है। ईश्वर को छोड़ कर कोई नहीं कर सकता। अगर पति-पत्नी एक दूसरे को बात करेंगे, तो भक्त होंगे तो एक समझ आ जाएगा; नहीं तो बोलेंगे, "मैं आपको संतुष्ट नहीं कर सकता", फिर वो बोलेंगे, "इतना blunt क्यों हो रहे हो? I can try" अच्छा लगता है सुनने में? यह कर्णप्रिय है बस। है हृदयविदारक वास्तव में, क्योंकि यही आपका नाश करेगा।

'All that glitters is not gold', यह सुना है? यह ठीक, इस परिपेक्ष में यह इतना भी नहीं चलेगा। 'Whatever glitters is not gold..., only Kṛṣṇa is gold', *'कृष्ण सूर्यसम्'*। बाकि जो दिख रहा है glittering वो सिर्फ glittering है। वो हमें भ्रमित कर रहा है कि, 'मुझ में आनन्द है।'

बचपन से ही इस संसार में परिवार में we are trained to hear lies, झूठ की training रहती है। 'साथ में खाने से प्रेम बढ़ता है', जो चीज़ exist नही करती वो बढ़ कैसे सकती है? जो चीज़ है ही नहीं त्रिकाल में वो बढ़ेगी कभी? बोलते हैं, 'हमारे घर में हीरों का पेड़ लगेगा', जिसका बीज ही नहीं है उसका पेड़ कैसे लगेगा?

बाबा पुस्तकों में बताते हैं कि यह जो जगत है यह वास्तविक जगत नहीं है, यह व्यवहारिक जगत है। यहाँ व्यवहार करना है जब तक जीवित हैं, किसलिए? उस वास्तविक जगत की, वास्तविक प्रेम की, वास्तविक पुरुष की प्राप्ति के लिए।

और जो जीव है उसकी जो संतुष्टि है वो तो हरि से हो सकती है, परंतु जो गौड़ीय वैष्णव हैं, उनकी संतुष्टि तो हरि भी नहीं कर सकते, जीव कैसे करेगा? हमारी संतुष्टि तो केवल राधारानी के चरणारविंदो में ही है। राधारानी के बिना केवल कृष्ण को तो..., हमें तो केवल कृष्ण चाहिए ही नहीं, केवल कृष्ण की उपासना, कृष्ण का प्रेम..., कृष्ण स्वयं आते हैं अपना अंगसंग देने के लिए मंजरियों को। इसे कहते हैं प्रेम, राधारानी के चरणों में अनन्य निष्ठा, कृष्ण भी नहीं चाहिए उनको।

हमें तो यहाँ जीव चाहिए, मंजरी को तो कृष्ण भी नहीं चाहिए। सर्वाकर्षक पुरुष, जिनके पीछे..., लक्ष्मी जिनकी प्राप्ति के लिए तपस्या करती हैं, तप करती हैं लक्ष्मी, लक्ष्मी को प्राप्त नहीं है, वो खुद हमारे सामने आ कर खड़े हों तब भी हमें नहीं चाहिए; ये हैं गौड़ीय वैष्णव, यह है मंजरी भाव। तो हमारी संतुष्टि जीव को छोड़िए..., हमारी संतुष्टि तृष्णा छोड़िए कृष्ण भी नहीं कर सकते। तृष्णा क्या कृष्णा भी नहीं। केवल राधारानी के चरणों में ही शांति, तृप्ति मिलेगी एक गौड़ीय वैष्णव को।

ठाकुर जी की छठवीं सालगिरह पर हम इनसे प्रार्थना करें कि यह स्मृति हमारे जीवन में प्रत्येक क्षण बनी रहे, कि कोई जीव हमें संतुष्ट नहीं कर सकता आपके अलावा। इनसे प्रार्थना करें कि यह स्मृति बनी रहे। क्योंकि यह स्मृति अगर एक क्षण के लिए भी छूटी न तो फँसे-फँसाए हो! फँसना नहीं है, फँसे-फँसाए हो! यह स्मृति जिस क्षण छूटी बस फँसे-फँसाए हो। समझ रहे हो? किसी से भी भगवद्-भाव से अलग सम्बन्ध नहीं करना, भगवद्-भाव युक्त होकर ही सम्बन्ध रखना है। पति-पत्नी हैं, वो माने कि पति-पत्नी नहीं हैं, ये तो प्रारब्धवश २ जीव साथ हैं।

और साधक को इसलिए कहा जाता है अनन्यता के लिए, कि अपने इष्ट में अनन्यता के लिए, कि हर जगह अपने इष्ट को देखे। साधक मतलब? हम साधक? साधक मतलब- हर जगह अपने इष्ट को देखे, हर जीव में इष्ट को देखे, राधारानी को

देखे, गौर को देखे। अपने घर में भी, बाहर में भी, हर जगह। यह साधक का स्वरूप होता है कि हर जगह इष्ट को देखता है। क्या हम देखते हैं? यदि नहीं, तो देखें। और जब स्थिति परिपक्व हो जाती है..., साधक को क्या करना होता है? पहले उसे दृश्य दिखता है, दृश्य मतलब ये सब कुछ दिखता है संसार का। साधक को दिखता है दृश्य, दृश्य में वो अपने इष्ट को एक प्रकार से आरोपित करता है, कि हाँ, मेरे इष्ट इन में हैं, मेरे इष्ट सब में हैं। साधक हर जगह आरोपित करता है दृश्य में इष्ट देव को। पर जब स्थिति परिपक्व हो जाती है तो दृश्य हट जाता है, *जित-देखूँ तित श्याम-ही श्याम या राधा ही राधा दिखाई दें।* यह परिपक्व अवस्था है। पर साधक की अवस्था यह नहीं है। साधक को हर एक में अपने इष्ट देव को देखें। मैं राधा-विनोद को देख रही हूँ, राधा-विनोद..., विनोद को नहीं, राधा-विनोद।

जिस क्षण यह स्मृति जाएगी..., आप सोच रहे हो कितने गाढ़ हैं ये संस्कार कि किसी भी जीव से हम तुष्टि की आशा करने लग जाते हैं। है कि नहीं है? चाहे पत्नी हो, बच्चा हो, बेटे से करने लग जाते हैं। तो यह, अगर स्मृति एक क्षण के लिए भी जाएगी कि कोई जीव संतुष्ट नहीं कर सकता तो फँसे-फँसाए हैं। ठाकुर से प्रार्थना करें कि वही हमारे सर्वस्व हो जाएँ। हैं तो वहीं, हम उन्हें मान लें कि वही हमारे सर्वस्व हैं। ठाकुर से प्रार्थना करें।

राधे-राधे।